E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(7): 07-09
Received: 09-05-2023
Accepted: 12-06-2023

उदय प्रताप राव
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. संतोष कुमार द्विवेदी
प्राचार्य, ज्योत्सना शिक्षा महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
उदय प्रताप राव
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

उदय प्रताप राव, डॉ. संतोष कुमार द्विवेदी

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i7a.1008

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा के सभी विकासखण्डों से 04–04 विद्यालय अर्थात कुल 36 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा किया गया है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं उसके समकक्ष संस्थान के छात्रों के मूल्यों का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित संस्थाओं से 30–30 छात्र एवं छात्राएं अर्थात कुल 1080 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों में सार्थक अन्तर हैं और इसी प्रकार छात्र एवं छात्राओं के जीवन मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया है।

कुटशब्दः रीवा जिला, उच्चतर माध्यमिक स्तर, ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय, विद्यार्थी, जीवन मूल्य

1. प्रस्तावना
मूल्य का शाब्दिक अर्थ है– उपयोगिता, वांछनीयता, महत्व। सामान्यतः किसी समाज में जिन आदर्शों को महत्व दिया जाता है और जिससे उस समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित और नियन्त्रित होता है उन्हें उस समाज के मूल्य कहते हैं। अथवा मानव जीवन में कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होते रहते हैं, जो कि समय की गति के साथ बढ़ते जाते हैं इन्हीं अनुभवों से कुछ सामान्य सिद्धान्त जन्म लेते हैं, जो व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करते हैं और उसके पथ–प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, मूल्य अथवा वैल्यूज के नाम से जाना जाता है। व्यक्ति अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो कुछ आदर्श विचार अथवा वस्तुओं को साधन के रूप में धारण करता है, वे धारण की गयी बातें उसके लिए कुछ मूल्य रखती हैं।
जीवन के सभी पक्षों में उसका समायोजन उसके मूल्य ही कराते हैं। मूल्य जीवनादर्श है जो जीवन को सँवारकर उसे योग्य बना देते हैं जिसके लिये ईश्वर ने विश्व समुदाय का सदस्य बनाया है। जीवन के मूल्य लोगों के बीच में तादात्म्य स्थापित करना सिखाते हैं। मूल्यों की शिक्षा वास्तव में माता–पिता व परिवार से मिलती है जिसे विद्यालयों में सँवारा जाता है। विद्यालयों की प्रकृति ही उनके परिवेश का निर्माण करती है। हिन्दी माध्यम के विद्यालयों का परिवेश परम्परागत् प्रकार का होता है जिसमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों में परम्परागत् ढ़ंग से मूल्यों का पोषण होता है और शिक्षा–दीक्षा मातृभाषा को माध्यम मानकर दी जाती है। हिन्दी माध्यम के बच्चों का भाषा विकास घर, समाज व विद्यालय में लगभग समान स्तर का होता है क्योंकि माध्यम ही उनकी मातृभाषा होती है। अंग्रेजी माध्यम के वद्यालयों का परिवेश आधुनिकता धारण किये हुये भौतिकता प्रभावी होता है जहाँ से बच्चों को परम्परागत् मूल्यों से हटकर कुछ कृत्रिम परिवेश में आना पड़ता है जहाँ समायोजन में कठिनाई आने लगती है और वह धीरे–धीरे उस परिवेश में अपने को समायोजन करने का प्रयास करता है इसमें सबसे बड़ी बाधा भाषा का माध्यम होता है, क्योंकि भाषागत् लगाव तो मातृभाषा का है घर व समाज में तो परम्परागत् भाषा में बने रहते हैं और विद्यालय की चहारदीवारी के अन्दर पहुँचते ही उनमें कृत्रिमता का परिवेश समायोजन करने की बाध्यता आ जाती है जिससे प्राकृतिक विकास प्रभावित होने लगता है बल्कि वह रोलप्लेयर बनने लगता है जिसका उसके व्यक्तित्व पर दोहरापन होने की विशेषतायें परिलक्षित होने लगती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

मूल्यों की शिक्षा घर के साथ–साथ स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, अपराधी संस्थानों और स्वैच्छिक युवा संगठनों में भी हो सकती है। मूल्य शिक्षा के दो मुख्य दृष्टिकोण हैं। कुछ लोग इसे मूल्यों के एक समूह को स्थापित करने या प्रसारित करने के रूप में देखते हैं जो अक्सर सामाजिक या धार्मिक नियमों या सांस्कृतिक नैतिकता से आते हैं। मूल्य एक प्रकार के मानक हैं, जिनके आधार पर व्यक्ति चयनित व्यवस्था के अनुरूप कार्य करने के लिए दिशा–निर्देश प्राप्त करता है और शिक्षा बालक की मूल प्रवृत्तियों में परिमार्जन कर उसके व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाती है। जेवन मूल्य एक ऐसे सद्गुणों का समूह है, जिसे अपनाकर मनुश्य अपने निष्चित लक्ष्यों की प्राप्ति करने हेतु जीवन पद्धति का निर्माण करता है। इससे व्यक्तित्व में उच्चता आती है। मानव मूल्यों में धारणाएं, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति, आस्था आदि समेकित होते हैं। ये मानव मूल्य एक ओर व्यक्ति के अन्तःकरण द्वारा नियंत्रित होते हैं जो दूसरी ओर समाज की संस्कृति, परम्परा, पर्यावरण द्वारा पोषित और ग्राह्य होते हैं। आत्म संयम, त्याग, साहस जैसी शक्तियां इसमें समाहित होती हैं। स्वच्छता, प्रेम, सत्य, सहयोग, समय पालन, अहिंसा, परमार्थ, कर्त्तव्य पालन, सहनशीलता, निष्काम कर्म, दया आदि अनेक जीवन मूल्य हैं जो जीवन की कसौटी बनकर मानव को मूल्यवान बनाती है।

3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का अध्ययन
- उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के जीवन मूल्यों का अध्ययन।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के जीवन मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – गंगेव, हनुमना, जवा, मऊगंज, नईगढ़ी, रायपुर कर्चुलियान, रीवा, सिरमौर एवं त्योंथर हैं। जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं उसके समकक्ष व्यावसायिक संस्थान जो मध्यप्रदेश शासन से मान्यता प्राप्त है, इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

समष्टि व प्रतिदर्शः प्रस्तुत षोध अध्ययन में रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों का अध्ययन किया जाना व्यवहारिक दृष्टिकोण से संभव नहीं है। सीमित समय और सीमित व्यय में अधिक प्रयुक्त, त्रुटिहीन और विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए न्यादर्श का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा के सभी विकासखण्डों से 04–04 विद्यालय अर्थात कुल 36 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा अध्ययन किया गया है। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं उसके समकक्ष संस्थान ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सकें तथा यह सभी संस्थान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हों।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 30–30 छात्र एवं छात्राएं अर्थात कुल 1080 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत ;ड्डद्धए ैण्क्ए 't' ज्मेज आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोध समस्या में उपकरणों का चुनाव शोध की परिकल्पना की प्रकृति पर निर्भर करती है। प्रत्येक उपकरण एक विशेष प्रकार के आंकड़े एकत्रित करने के लिए उपयुक्त होता है। आवश्यकता एवं सुविधा की दृष्टि से शुद्ध, वस्तुनिष्ठ तथा विश्वसनीय आंकड़ों के संकलन के लिए मूल्य परीक्षण – डॉ. तारेख भाटिया एवं डॉ. एस.सी. शर्मा द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से कुलश्रेष्ठ, एस.पी.. (1987)[1], मेहता, सी. (1970)[2], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[3], अंसारी, एम.एम. (1988)[4], .पाठक, पी.डी. (2007)[5], शर्मा, राजकुमारी, श्रीवास्तव एस.बी.एन., दुबे, एस.के. (2007)[6], गुप्ता, आर.पी. (2001)[7], शर्मा तृष्णा (2008)[8] ने शोध विधि एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का अध्ययन से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. रीवा जिले का सामान्य परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा

81.2° पूर्वी देक्षांश से 82.18° पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थी	540	34.09	1.27	2.58	1.96	6.5
2.	ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी	540	34.59	1.27			

df = 1078

सारणी क्रमांक 5.15 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 34.09 एवं 34.59 है। एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 1.27 एवं 1.27 प्राप्त हुआ है। इनका df = 1078 है। गणना से प्राप्त 't' का मान 6.5 है, जो सारणी में दिए गिए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों में सार्थक अन्तर हैं।

सारणी 2: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के जीवन मूल्यों के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	छात्र	540	34.30	1.28	2.58	1.96	8.00
2.	छात्राएँ	540	34.93	1.29			

df = 1078

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 34.30 एवं 34.93 है। तथा मानक विचलन ृ;क्द्ध क्रमशः 1. 28 एवं 1.29 प्राप्त हुआ है। इनका कि 1078 है। गणना से ज का मान 8.00 प्राप्त हुआ है। जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2. 58 से अधिक है अतः शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के जीवन मूल्यों में सार्थक अन्तर है।

सन्दर्भ

1. कुलश्रेष्ठ, एस.पी.. (1987). मैनुअल ऑफ हिन्दी एडाप्टेशन ऑफ स्टडी ऑफ बैल्यूज, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा.
2. मेहता, सी. (1970). 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली.
3. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993). ''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. अंसारी, एम.एम. (1988). डिटरमाइनेट्स ऑफ कोस्ट्स इन डिस्टेंस एजुकेशन, इन कौल, बी.एन. सिंह, बी. एवं अंसारी एम.एम. स्टडीज इन डिस्टेंस एजुकेशन, नई दिल्ली, ए.आई. यू. एवं इग्नू.
5. पाठक, पी.डी. (2007). भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
6. शर्मा, राजकुमारी, श्रीवास्तव एस.बी.एन., दुबे, एस.के. (2007). भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें। राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
7. गुप्ता, आर.पी. (2001). भारतीय शिक्षित जनमानस में विविध जीवन मूल्यों का सापेक्ष महत्व, भारतीय शिक्षा बोध पत्रिका, वर्ष–21, अंक–1.
8. शर्मा तृष्णा (2008). किशोरों में समायोजन क्षमता शोध प्रकल्प अंक 43, वर्ष 13 संख्या 2, पृष्ठ संख्या 31– 33।